और अब चोटीकटवा

देश के कुछ हिस्सों में महिलाओं की चोटी काटे जाने की 100 से ज्यादा घटनाएं सामने आ चुकी हैं। कहा जा रहा है कि पीड़ित युवतियों और महिलाओं को रात में अचानक महसूस हुआ कि कोई उनका गला दबा रहा है, फिर वे अचेत हो गईं। बाद में लोगों ने देखा कि बिस्तर पर उनके बाल कटे पड़े थे। पुलिस का कहना है कि इस तरह की घटनाएं राजस्थान के गांवों से शुरू होकर हरियाणा, उत्तर प्रदेश और दिल्ली में फैलती गई हैं। अभी हालत जितने मुंह उतनी बातों वाली है और लोगों में इससे दहशत देखी जा रही है। कोई इसे ओझाओं-तांत्रिकों की करतूत बता रहा है तो कोई अदृश्य शक्तियों का प्रकोप। आगरा में तो एक बूढ़ी महिला को चोटी काटने वाली डायन बताकर मार डाला गया। लोग इससे बचने के लिए अपने-अपने घरों के दरवाजों पर हल्दी और मेहंदी के छापे बना रहे हैं या नीम के डंठल लगा रहे हैं। भारतीय समाज में इस तरह का मास हिस्टीरिया बहुत दिनों के बाद देखा गया है। इससे पहले 2006 में हजारों लो÷ यह अफवाह सुनकर मुंबई के एक समुद्र तट पर पहुंचने लगे कि वहां समुद्र का पानी अचानक मीठा हो गया है। इसी तरह 2001 में मुंहनोचवा या मंकीमैन की अफवाह फैली थी। दिल्ली में सैकड़ों लोगों ने दावा किया कि मुंहनोचवा ने उन पर हमला किया, लेकिन जब ऐसी खबरों पर टीवी की टीआरपी आनी कम हो गई तो धीरे-धीरे करके ऐसे किस्से भी आने बंद हो गए। और पीछे जाएं तो 21 सितंबर 1995 की सुबह गणेश मूर्तियों के चम्मच से दूध पीने की अफवाह समूचे देश में फैल गई, जबकि चम्मच में दूध भरकर उसे किसी भी पत्थर से सटा दिया जाए तो वह पत्थर की तरफ जाने लगता है। मास हिस्टीरिया मानव जीवन का एक कड़वा सच है, जो विकसित समाजों में भी देखा जाता है। 19वीं सदी के अंत में लंदन में जैक द रिपर नामक एक सीरियल किलर की दहशत छाई रही, जो कुछ समय बाद खुद ब खुद खत्म हो गई। दरअसल हमारे अचेतन मन में न जाने क्या-क्या चीजें चलती रहती हैं। ऐसे में किसी भी असामान्य गतिविधि पर बहुत सारे लोग एक साथ चर्चा करने लगें तो वह मास हिस्टीरिया में बदल जाती है। इसके असर में आकर कई लोग जो सुनते हैं, वही करने लग जाते हैं। इसलिए स्थानीय खुफिया संस्थाएं इस बारे में जो भी जानकारी जुटा सकती हैं, जुटाएं और जहां जरूरी हो, वहां पुलिस कार्रवाई भी की जाए, लेकिन सबसे जरूरी यह है कि किसी भी सूरत में कयासबाजी को बढ़ावा न दिया जाए। इस पर फिजूल की चर्चा बंद होते ही चोटीकटवा भी मुंहनोचवा के रास्ते चला जाएगा।

आपदा प्रबंधन तंत्र भी बने चुस्त, भूकंप की चुनौती

बीते दिनों राष्ट्रीय भूकंप विज्ञान केन्द्र ने दावा किया है कि देश के 29 शहर भूकंप की दृष्टि से बेहद गंभीर हैं। इनमें देश की राजधानी दिल्ली और देश के नौ राज्यों की राजधानियां शामिल हैं। इनमें अधिकांश जगहें हिमालयी क्षेत्र में हैं जो दुनिया में भूकंप की दृष्टि से सर्वाधिक सक्रिय क्षेत्रों में से एक है। असल में देश की राजधानी दिल्ली, पटना, श्रीनगर, कोहिमा, पुडुचेरी, गुवाहाटी, गंगटोक, शिमला, देहरादून, इंफाल और चंडीगढ़ वे शहर हैं जो भूकंप प्रभावित सबसे अधिक संवेदनशील हैं और भूकंपीय क्षेत्र चार एवं पांच में आते हैं। आबादी के लिहाज से देखें तो इन शहरों की कुल आबादी तकरीबन तीन करोड़ से भी काफी अधिक है। भूकंप का सबसे ज्यादा संकट देश के समूचे पूर्वोत्तर क्षेत्र के अलावा जम्मू-कश्मीर के कुछ हिस्सों, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, गुजरात में कच्छ का रण क्षेत्र, उत्तरी बिहार के हिस्से और अंडमान निकोबार द्वीप समूह में है जो भूकंप संभावित क्षेत्र-4 और देश की राजधानी दिल्ली सहित जम्मू-कश्मीर के कुछ हिस्सों, सिक्किम, उत्तरी उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, गुजरात और महाराष्ट्र का एक छोटा-सा हिस्सा ऐसा है जो भूकंप संभावित सबसे ज्यादा संवेदनशील इलाके जोन-4 में आता है। हिमालयी क्षेत्र की जब बात आती है तो हिन्दूकुश पर्वत श्रृंखला में पूर्वोत्तर से म्यांमार तक इसका विस्तार है। हिमालय की ऊंचाई वाला और जोशीमठ से ऊपर वाला तथा उत्तर-पूर्व में शिलांग से धारचूला तक जाने वाला हिस्सा भी इसमें शामिल है। भूकंप की स्थिति में यहीं सबसे अधिक तबाही की आशंका है। जहां तक दिल्ली की बात है, स्काईमेट संस्था की रिपोर्ट के मुताबिक दिल्ली भूकंप की दृष्टि से देश के पांच सबसे ज्यादा संवेदनशील शहरों में तीसरे स्थान पर है। इस बाबत आवास एवं शहरी विकास मंत्री राव इंद्रजीत सिंह खुलासा कर चुके हैं कि राजधानी के लुटियन जोन के 700 बंगले भूकंप आने पर उनमें रहने वालों के लिए घातक हो सकते हैं। यह इलाका बेहद संवेदनशील होने के साथ-साथ अति महत्व का भी है। इसको मद्देनजर रखते हुए मंत्री महोदय ने लोकसभा में कहा कि इन बंगलों के आवश्यक सुधार का काम चरणबद्ध तरीके से किया जा रहा है। वैसे पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय की मानें तो वह काफी पहले अपनी रिपोर्ट में यह खुलासा कर चुका है कि दिल्ली के पूर्वी मध्य व उत्तरी हिस्से भूकंप की दृष्टि से अति संवेदनशील हैं। यहां यदि रिक्टर स्केल पर छह से अधिक तीव्रता का भूकंप आया तो बड़े पैमाने पर जानमाल की हानि होगी। इसका सबसे अहम कारण यह है कि यहां की आधे से अधिक इमारतें भूकंप के झटके को नहीं झेल पायेंगी। वहीं जनसंख्या घनत्व अधिक होने के कारण अधिकाधिक तादाद में लोगों के मारे जाने की आशंका को नकारा नहीं जा सकता। इस बाबत दिल्ली नगर निगम यह मान चुका है और वह दिल्ली हाईकोर्ट में भी कह चुका है कि दिल्ली के तकरीबन 80 फीसदी मकान अनियोजित तरीके से बिना मंजूरी के बने हुए हैं। इसके अलावा पांच फीसदी मकानों में नक्शा पास कराने के बावजूद मनमाने तरीके से अवैध निर्माण कराया गया है। वैज्ञानिकों के अनुसार देश की राजधानी दिल्ली में 7.5 तीव्रता वाला भूकंप कभी भी आ सकता है। लेकिन भूकंप से निपटने की तैयारी के मामले में हम बहुत पीछे हैं। इस बारे में संसद की लोक लेखा समिति भी देश में भूकंप, बाढ़, सूखा सहित अन्य आपदाओं से निपटने की तैयारियों पर सवाल उठा चुकी है। समिति के अनुसार प्रशिक्षित लोगों की कमी, प्रशिक्षण के लिए आधारभूत संरचना और उपकरणों के अभाव का असर एनडीआरएफ के कामकाज पर पड़ रहा है। भूकंप के खतरों के मद्देनजर लोगों को जागरूक करने का अभियान भी आपदा प्रबंधन की तैयारी के तहत अनिवार्य रूप से किया जाना चाहिए। इसे राष्ट्रीय आपदा मानते हुए समन्वित रणनीति बनाने की बेहद जरूरत है। देखा जाये तो भुज, लातूर और उत्तरकाशी में आए भूकंप के बाद यह आशा बंधी थी कि सरकार इस बारे में अतिशीघ्र कार्रवाई करेगी। लेकिन जो कुछ हुआ वह सबके सामने है। देश की राजधानी दिल्ली सहित सभी महानगरों में कंक्रीट की आसमान छूती बहुमंजिली मीनारें ही मीनारें दिखाई देती हैं। यह बीते बीस-पच्चीस सालों के विकास का नतीजा है।

जाहिर है इनमें से दो प्रतिशत ही इमारतें भूकंपरोधी तकनीक से बनायी गई हैं। भूकंप आने की दशा में सर्वाधिक हानि जन धन की ही होती है। इसलिए भूकंप से बचने की खातिर ऐसे मकानों की सुरक्षा सर्वोपरि होनी चाहिए।

ऐसी स्थिति में पुराने तरीकों से बने मकान तोड़े नहीं जा सकते। इसके लिए समाज, सरकार, वैज्ञानिक और आम जनता सबको तेजी से प्रयास करने होंगे अन्यथा बहुत देर हो जायेगी।

राहत के लिए कटौती

सस्ते कर्ज की जगी उम्मीदें

ब्याज दर में चौथाई फीसदी की कटौती का आरबीआई का फैसला सीधा संकेत है कि उसने राजनीति के लोकलुभावन इशारों पर ध्यान देने की जगह वही करने का मन बना लिया है जो मौजूदा हालात में सुधार के लिए देश के नियंता बैंक को करना चाहिए। आरबीआई की ओर से वित्तीय पूर्वानुमानों के अनुरूप कदम बढ़ाना देश की आर्थिक सेहत के लिए शुभ संकेत भी है। रेपो रेट में कटौती की उम्मीद तो सबको थी, पर बैंकों में पैसा जमा करके ब्याज कमाने वालों का जोर था कि रेपो रेट 50 प्वाइंट तक घटे। देश की आर्थिक व औद्योगिक सेहत को लेकर चिंता जताते रहे जानकारों को गवर्नर की जगह नियंता समिति के सामूहिक फैसले की नई प्रणाली से उम्मीद भी कुछ ऐसी ही थी। खुदरा मुद्रास्फीति में गिरावट, एक सामान्य मानसून, वैश्विक स्तर पर तेल की कीमतों में कमी, कीमतों पर जीएसटी रोलआउट का तत्काल प्रतिकूल असर न होने और आठ वर्षों में विनिर्माण क्षेत्र में निम्नतम स्तर तक गिरावट के साथ सुस्त विकास दर के चलते रेपो दर में कटौती की उम्मीदें बढ़ीं। लेकिन रेपो रेट में कटौती का फायदा पहुंचाने में बैंकों की ना-नुकुर और ढिलाई से रिजर्व बैंक की इन घोषणाओं को लेकर जनता की प्रतिक्रिया व अपील का भाव खो सा गया है। आरबीआई के गवर्नर उर्जित पटेल की टिप्पणी है, 'बैंकों ने रेपो रेट कटौतियों का फायदा ग्राहकों तक पहुंचाने में कोताही बरती।' इसका कारण यह है कि बैंक खुद संकट की स्थिति से जूझ रहे हैं। गणों का भुगतान न होने का बोझ बैंकों के लिए असहनीय होता जा रहा है। कॉर्पोरेट क्षेत्र का एक बड़ा हिस्सा अपने गण का भुगतान करने में असमर्थ है। अकेले दूरसंचार क्षेत्र की कंपनियों पर लगभग 1 लाख करोड़ रुपये का ऐसा कर्ज चढ़ा है। रिलायंस से प्रतिस्पर्धा के चलते टेलीकाम सेक्टर की कंपनियां यह कर्ज चुकाने की हालत में नहीं हैं । दूसरे, कॉर्पोरेट क्षेत्र से बैंक ऋण की मांग सूख गई है। अगर ब्याज दरों को और नीचे लाया गया तो उम्मीद है कि सस्ते क्रेडिट निजी निवेश, विकास और सेवा क्षेत्र को कुछ गति दे सकेंगे। दरअसल नोटबंदी के बाद बैंकों के पास इतने नोट आ गए हैं कि वे परेशान हैं कि इस धन का क्या करें। वरिष्ठ नागरिकों और ब्याज की आय पर निर्भर रहने वाले समाज के दूसरे वर्गों के सामने विकट स्थिति है। अगर एसबीआई ने बचत ब्याज दरों में कटौती की तो अन्य बैंकों को भी जल्द ही ब्याज दरें घटानी होंगी। बेरोजगारी ने युवाओं की निराशा बढ़ा दी है। अब तक घोषित पहले तिमाही कॉर्पोरेट परिणाम भी उत्साहवर्धक नहीं रहे हैं। अब यह सरकार की जिम्मेदारी है कि वह ऐसे हालात बनाए, जिनसे विनिर्माण को बढ़ावा मिले, बैंकों के मुद्दे सुलझें और कारोबारी माहौल में समग्र सुधार के हालात बन सकें।

बदलाव की हो स्वस्थ दिशा-दशा

उस दिन जब पाकिस्तान की सर्वोच्च अदालत ने वहां के प्रधानमंत्री (अब भूतपूर्व) नवाज़ शरीफ को भ्रष्टाचार का दोषी करार दिया और नवाज़ शरीफ को पद से इस्तीफा देना पड़ा तो सोशल मीडिया पर एक चुटकुला काफी वायरल हो गया। इसमें कहा गया था कि पाकिस्तानी प्रधानमंत्री के इस्तीफे की खबर आते ही भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह ने अरुण जेटली और नितिन गडकरी को तत्काल पाकिस्तान के राष्ट्रपति से मिलने और सरकार बनाने का दावा पेश करने के लिए पाकिस्तान पहुंचने के लिए कहा। इस तरह के चुटकुले का बनना और प्रसारित होना एक तरह से देश की उस स्थिति पर गंभीर टिप्पणी है जो पिछले एक अर्से से देश की राजनीति में दिख रही है। पाकिस्तानी प्रधानमंत्री के इस्तीफे से ठीक पहले भारत के एक राज्य बिहार में महागठबंधन की सरकार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने इस्तीफा देकर राजनीति की बिसात पर खेले जा रहे खेल को गरमा दिया था। इस इस्तीफे के कुछ ही मिनट बाद प्रधानमंत्री का ट्वीट करके नीतीश को शुभकामनाएं देना और फिर भाजपा के समर्थन की घोषणा, राज्यपाल द्वारा जद-यू और भाजपा की मिली-जुली सरकार के लिए निमंत्रण देना और कुछ ही घंटों में बिहार में नयी सरकार का बन जाना देश के राजनीतिक चरित्र में आ रहे बदलाव की एक बानगी है। बिहार के इस घटनाक्रम को प्रधानमंत्री मोदी और भाजपा अध्यक्ष अमित शाह की राजनीतिक सूझबूझ के रूप में देखा-दिखाया जा रहा है। आम चुनाव से पहले नरेंद्र मोदी ने कांग्रेस-मुक्त भारत का नारा दिया था और जिस तरह की अभूतपूर्व सफलता उन्हें चुनाव में मिली, उसके आधार पर यह दावा किया गया कि देश की जनता भी कांग्रेस के प्रभावी विकल्प की तलाश कर रही थी। यह बात ग़लत भी नहीं लगती। पिछले तीन सालों में देश में हुए विभिन्न चुनावों में भाजपा को जो सफलता मिली है, वह इस बात का स्पष्ट संकेत है कि देश का मतदाता कांग्रेस के शासन से ऊब चुका था, विकल्प चाहता था। वैसे, मतदाताओं द्वारा अपने वोट से सरकारों को बदलना एक स्वस्थ और जीवंत जनतंत्र की पहचान है। लेकिन जिस कांग्रेस-मुक्त भारत की कल्पना भाजपा के नेतृत्व ने देश को दी थी, उसे जिस रूप में लाने की कोशिशें हो रही हैं, उसके औचित्य पर सवाल उठाया जाना भी हमारे जनतंत्र की परिपक्वता की एक पहचान है। पाकिस्तान से जुड़े जिस चुटकुले की बात ऊपर कही गयी है, उसके पीछे गोवा और मणिपुर जैसे राज्यों में सरकार बनाने के भाजपाई तरीके की कहानी है। इन दोनों राज्यों में आज भाजपा की सरकारें हैं, बावजूद इसके कि विधानसभा में सबसे बड़ा दल भाजपा नहीं थी। बिहार में भी जिस ÷ति से नयी सरकार बनी है, उसे सत्ता हड़पने के संदर्भ में ही समझा जा सकता है। यह भी कहा जा सकता है कि 'राजनीति में जो पहले मारे वह वीर' वाली कहावत जायज़ मानी जाती है। लेकिन सवाल सिर्फ सरकारें हड़पने के तरीके का ही नहीं है, कांग्रेस-मुक्त भारत की कल्पना का भी है। क्या कांग्रेस-मुक्त भारत का नारा सिर्फ भाजपा की सरकारें बनने तक ही सीमित था अथवा इसका कुछ और मतलब भी था? था नहीं, है कुछ और मतलब उस नारे का है। कुछ और मतलब नहीं है तो होना चाहिए। सवाल यह है कि शासक की मानसिकता क्या है? जवाहर लाल नेहरू से लेकर इंदिरा गांधी और फिर राजीव गांधी तक देश में कांग्रेसी-शासन की एक लंबी परंपरा रही है।

अंतरात्मा की जवाबदेही

अंतरात्मा ने नेताजी को हमेशा सही राह दिखलाई है। उनके कदम जब-जब भी बहक कर गलत राह की तरफ उठे तब-तब उनके अंदर की आत्मा आंख मलती हुई उठ गई और लगी नेताजी को लताड़ने। अंतरात्मा ने तब तक अपना बोरिया बिस्तर फिर से सोने के लिए नहीं लगाया जब तक कि नेताजी ने अपने कदम पीछे नहीं खींचे। सही राह पर आते ही आत्मा फिर से चद्दर तानकर सो गई। बचपन से ही नेताजी का पढ़ने में मन नहीं लगता था। मां-बाप डांटते ये आवारागर्दी छोड़ कर थोड़ी पढ़ाई-लिखाई कर ले पर नेताजी पूरे आत्मविश्वास से जवाब देते थे-मेरी आत्मा मेरे साथ है। उधर उनकी अंतरात्मा कहती रहती-पढ़-लिखकर अपना भविष्य खराब मत कर ! तुझे तो समाज और देश को एक नई दिशा देनी है। अंतरात्मा को वह भविष्य बांचने की कला आती है। पिछले चुनाव के ऐन पहले वह जाग गई और नेता जी को कचोटने लगी। जब उन्होंने अंतरात्मा से मंशा पूछी तो वह हैरान रह गए। अंतरात्मा उन्हें धुर विरोधियों के झुण्ड में शामिल होने का कह रही थी। उन्होंने प्रतिप्रश्न किया-मैं कैसे अपने सुशासन को कुशासन में मिक्स करूं? क्या इससे मेरी आभा बढ़ेगी ? नहीं ! मुझे ऐसे तेजस्वी नहीं बनना। अंतरात्मा प्रेक्टिकल है। उसने जवाब दिया-तुम भले ही रमते जो÷ी हो। पर अपने परिवार और समाज की तो सोचो। क्या उनके प्रति तुम्हारा कोई कर्तव्य नहीं है? क्या तुम्हें एक मजबूत देश के लिए मजबूत समाज और मजबूत घर-परिवार की जरूरत नहीं है? यह सुनकर नेताजी निरुत्तर हो गए। लोगों ने जब उन्हें जमकर धिक्कारा, उन्हें मौकापरस्त, दलबदलू कहा, तब भी उनकी आत्मा कहती रही-हमारे लिए प्रदेश पहले है। हमें मूल्यों की राजनीति पसंद है। और अंतरात्मा की दिखलाई राह एकदम सही निकली। नेताजी फिर से लाल बत्ती की कार में जा बैठे। पत्नी तो अंतरात्मा को अपनी सगी सौतन मानती है। वह कहती है कि मेरी भी नहीं सुनते पर अंतरात्मा की हर बात झट मान लेते हैं। साला कहता है-जिज्जी मेरी भी सिफारिश कर दो तो पत्नी रुआंसी होकर कहती मेरी सिफारिश वहां नहीं चलती। उनकी अंतरात्मा सिफारिश करेगी तो वह सुनेंगे। पिछले दिनों उनकी अंतरात्मा अचानक करवट बदलकर उठ गई। और उन्हें इस झुण्ड से निकलकर दूसरे समूह में जाने की हठ करने लगी। नेता जी ने समझाया कि उनकी बड़ी किरकरी होगी। लोग पूछेंगे तो क्या जवाब दूंगा। पर आत्मा टस से मस नहीं हुई। वह बोली-सारा इल्जाम मेरे माथे मढ़ देना। यह सुनकर नेता जी भावुक हो गए और अंतरात्मा के सामने हथियार डाल दिए।

हक की हद

एक बार महात्मा गांधी का इलाहाबाद जाना हुआ तो वे जवाहर लाल नेहरू के साथ आनंद भवन में ठहरे। प्रातःकाल दोनों नदी के पास जा हाथ-मुंह धोने लगे। बातचीत भी चल रही थी। गांधीजी के लोटे का पानी खत्म हो गया। वे बोल पड़े-ओह, पानी खत्म हो गया। कुल्ला करना तो शेष रह गया। उनकी बात सुन नेहरू बोले-बापू यह यमुना निरंतर प्रवाहमान है, जितना पानी चाहिए, फिर ले लीजिए। इसमें पानी की कमी नहीं। उनकी बात सुन बापू मुस्कुराए और बोले-जवाहर, ठीक कहते हो, यहां यमुना बह रही है। किंतु इस पर अकेले मेरा हक नहीं। लाखों-करोड़ों लोगों को इसका पानी चाहिए। मैं अपने हक से ज्यादा पानी खर्च करूं, यह मुझसे न होगा।

राशिफल

मेष: आज आप हानिकर विचार, व्यवहार और आयोजन से दूर रहें ऐसी गणेशजी की सलाह है। नहीं तो शारीरिक आलस्य एवं व्याकुलता बढ़ेगी। स्वास्थ्य कुछ नरम-गरम रहेगा। सभी कार्य आसानी से निपट जाएंगे। प्रतिस्पर्धियों के साथ वाद-विवाद टालिएगा।

वृषभ: सरकार विरोधी कार्य एवं प्रवृत्तियों से दूर रहने की गणेशजी सलाह देते हैं। नए कार्य का प्रारंभ न करें। स्वास्थ्य भी बिगड़ सकता है। मनभी कुछ व्यग्र रहेगा। वाणी को एक रखने पर ध्यान दीजिएगा। व्यवसाय में आपत्ति खड़ी हो सकती है।

मिथुन: आजका दिन सुख-शांतिपूर्वक बीतेगा। दैनिक कार्यों में ही आज फंसे न रहिएगा। मन को प्रसन्न और हल्का करने के लिए आप मनोरंजन का आसरा लेंगे। आप स्नेहीजनों व मित्रों को भी इस आनंद में सहभागी बनाएंगे। परंतु मध्याहन के बाद मन चिंताग्रस्त रहेगा। संवेदनशीलता की मात्रा बढ़ेगी।

कर्क: गणेशजी कहते हैं कि बहुत बड़ा आर्थिक लाभ आपकी प्रतीक्षा कर रहा है। व्यावसाइयों के लिए आजका दिन लाभदायी है। कार्य की सफलता के कारण पदोन्नति और यश प्राप्त होगा। मध्याहन के बाद आप मनोरंजन हेतु कहीं जाने का अवसर प्राप्त करेंगे।

सिंह: साहित्य-कला के प्रति आज आप में रुचि रहेगी ऐसा गणेशजी कहते हैं। पेट सम्बंधी व्याधियों से शरीर अस्वस्थ रह सकता है। मध्याह्न के बाद आर्थिक संकट का अंत आएगा। घर का वातावरण आनंदमय रहेगा। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। व्यवसाय में लाभ होगा।

कन्या: शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थता बनाए रखने पर ध्यान देने की गणेशजी आपको सलाह देते हैं। माता का भी स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। स्वजनों पर आपत्तिजनक प्रसंग आ सकता हैं। धनहानि के भी योग हैं। पानी से संभलकर चलिएगा। यात्रा-प्रवास न करें।

तुला: आजका दिन नया कार्य प्रारंभ करने के लिए अनुकूल है ऐसा संकेत गणेशजी देते हैं। आध्यात्मिक विषय तथा गूढ़ रहस्यों की ओर आकर्षण रहेगा। परंतु मध्याह्न के बाद स्फूर्ति और प्रसन्नता का अभाव हो सकता है। घर में कलेश का वातावरण रहेगा। सबके सामने सन्मानभंग न हो इसका ध्यान रखिएगा।

वृश्चिक: गणेशजी कहते हैं कि परिजनों के साथ भ्रांति या मनदुख होने की संभावनाएं अधिक हैं। वाणी पर संयम रखना होगा। कार्य में अपेक्षित सफलता नहीं मिलगी। मन में दुविधा रहेगी। कार्यभार अधिक रहेगा। परंतु मध्याह्न के बाद आपके मन से ग्लानि दूर होकर आनंद या प्रसन्नता छाई रहेगी। मित्रों और स्नेहीजनों के साथ मेल-जोल बढ़ेगा। प्रतिस्पर्धियों को पराजित कर सकेंगे। भाग्यवृद्धि होगी।

धनु: आज धार्मिक प्रवास होगा ऐसे संकेत गणेशजी देते हैं। आप निर्धारित कार्यों को आज संपन्न कर सकेंगे। शारीरिक और मानसिक स्वस्थता बनी रहेगी, जिससे स्फूर्ति और प्रसन्नता छाए रहेंगे।

मकर: आज धार्मिक और आध्यात्मिक विषयों में रुचि रहने से उन कार्यों के पीछे व्यस्तता रहेगी तथा उनके पीछे खर्च भी होगा। कोर्ट-कचहरी से संबंधित कार्य उपस्थित होंगे। व्यवसायिक कार्यों में विघ्न उत्पन्न हो सकते हैं।

कुंभ: आज का दिन लाभदायी है ऐसा गणेशजी संकेत देते हैं। व्यवसायिक क्षेत्र में आपके लिए आज लाभदायी दिन है। मित्रों के साथ भेंट होने से मन में आनंद छाया रहेगा। उनके साथ प्रवास का आयोजन भी हो सकता है।

मीन: व्यवसायिक दृष्टि से आज आपके लिए लाभदायी दिन है ऐसा गणेशजी कहते हैं। आपकी कार्यसफलता के कारण अधिकारी आप पर प्रसन्न रहेंगे। व्यवसाय में पदोन्नति के भी योग हैं। व्यापारियों को व्यापार में लाभ होगा तथा उनके कार्यक्षेत्र में वृद्धि भी होगी। पिता से लाभ होगा। परिवार में वातावरण आनंददायी रहेगा। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

शब्द सामर्थ्य Shabd Samarth

बाएं से दाएं
1. भेद, गुप्तबात, राज़ 4. मयूर 5. बायां, विरुद्ध 6. निशाचर, रात में विचरण करने वाला 8. अयोग्य, नाकाबिल 10. थप्पड़ 11. भ्रम, संदेह 13. धातु से तैयार किया गया डोर, उच्च, स्वच्छ, उद्धार 14. राज्यपाल व राष्ट्रपति के संबोधन के लिए प्रयुक्त एक शब्द, अधिक महिमा वाला 16. दंडित व्यक्ति को फांसी देने वाला कर्मचारी, अत्यंत क्रूर व्यक्ति 17. दलील, सुविचारित बात, चमत्कारी कथन 18. अचानक, एकाएक, अकस्मात् 19. दूध देने वाली एक पालतु पशु 20. सलाह, मशविरा 21. सूर्य, सूरज 22. हट्टाकट्टा नौजवान, हृष्टपुष्ट।

ऊपर से नीचे
1. प्रस्थान, जाना, गमन 2. हमला करने वाला 3. झुका हुआ नत 4. किले के चारों तरफ खोदी गई खाई, लोहे आदि पर लगा जंग 6. धन, रोकड़ा, नकदी 7. चमकता हुआ, चम-चम करता हुआ 9. निकटस्थ वस्तु का निर्देशक सर्वनाम 12. सुंदर, कामना करने योग्य 13. शक्तिशाली, बलवान 14. केवट, मांझी 15. दुर्घटना 16. भारत के राजग सरकार के पूर्व वित्तमंत्री का नाम 19. चंपत, लुप्त, नदारद 20. विशिष्ट गान प्रकार, प्रेम, इच्छा।

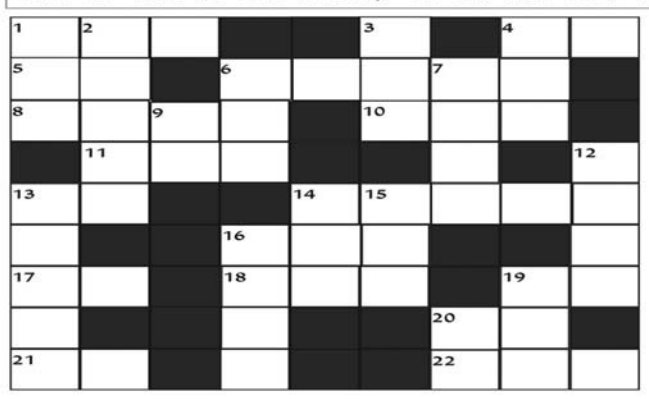

पिछले अंक का हल

ने	पा	ल		ज	ग	दी	श	
प	क	ड़		हा		पा		आ
थ्य		क	मा	न		व	त	न
	ना	प			मा	ली		न
	दा	न	वी	र	ता		न	फा
खू	न		रा				म	न
स		म	न	न		य	की	न
ट	क्क	र		वी		ती	न	
		ना		न	र	म		

सू-दोकू

	6	3		8		1		4
8			3		4		7	
	4			5		8		
3		8			1		4	
	1			4		9		7
		4			2		1	
1				3		4		8
	8		2		9		3	
		9		1		2		5

नियम
1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गों का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.36 का हल

6	7	9	2	4	5	3	1	8
2	1	8	3	7	6	9	5	4
7	6	4	5	2	8	1	3	9
3	8	1	6	9	7	2	4	5
9	2	5	4	1	3	8	6	7
8	3	7	9	6	4	5	2	1
5	4	2	8	3	1	7	9	6
1	9	6	7	5	2	4	8	3
4	5	3	1	8	9	6	7	2